८९१ ६
विद्या।न्वि

हिन्दुस्तानी एकेडेमी, पुस्तकालय
इलाहाबाद

वर्ग संख्या ८११ ८
पुस्तक संख्या विद्या/चि
क्रम संख्या 624

चित्रण

1714
18/12/28

श्रीविद्याभूषण 'विभु'

ओ३म्

चित्रकूट-चित्रण

(नैसर्गिक काव्य)

रचयिता

श्रीविद्याभूषण 'विभु'

प्रणेता पद्यपयोनिधि, सुहराब और रुस्तम, ढपोरशंख
तथा अन्य कहानियाँ विरजानन्द विजय आदि

प्रकाशक—

कलाकार्य्यालय,

प्रयाग।

प्रथम वार]   सम्वत् १९८१ वि०   [मूल्य ।=)

मुद्रक—पण्डित रामप्रसाद वाजपेयी,
कृष्ण-प्रेस,
हिवेट रोड, प्र

ओ३म्

समर्पण

साहित्य सारथि आर्य्य भाषा तथा वैदिक साहित्य
के प्रसिद्ध मर्मज्ञ
पूज्यास्पद श्री प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय, एम०ए०,

श्रीमन् !

नित्य निसर्ग निरीक्षण करना सत्कवि कर्म सिखाया है।
कलित काव्य कानन में लाकर कविता कुंज दिखाया है॥
सञ्चित किये सुमन कुछ चुनकर वनराजी के विचरण में।
विज्ञ ! समर्पण करता हूँ मैं रख उनको इस चित्रण में॥

श्रीमद्वात्सल्यभाजन,
'विभु'

ओ३म्

निवेदन

'पद्मपयोनिधि' 'सुहराब और रुस्तम' आदि काव्यों के रचयिता श्री विद्याभूषण 'विभु' जी की प्रौढ़ कवित्वशक्ति से साहित्य संसार भली प्रकार परिचित है। काव्योपवन से नवीन नवीन पराग सम्पुट प्रसून प्रस्तुत कर विभुजी सहृदयों को प्रफुल्लित कर रहे हैं। हम इसको अपना सौभाग्य समझते हैं कि पाठकों के समक्ष हमें आज कविवर की एक नवीन और अनूठी कृति भेंट करने का अवसर प्राप्त हुआ है।

यह काव्य रसिकों के मनोरञ्जन में सहायक होगा या नहीं, इसके विषय में कहना ही व्यर्थ है। पर हम इतना अवश्य कहना चाहते हैं कि यह एक प्रकृति प्रेमी पुरुष प्रदत्त पुष्पों की चित्ताकर्षक माला है। चित्रपुरी, चित्राचल, और चित्रवन के मनोरम दृश्य कवि की मनोमोहक उक्तियों सहित हृदय को आनन्द की तरंगों से अवश्य ही परिपूरित कर देंगे। चित्राचल के ऐतिहासिक पवित्र स्थानों का प्राचीन गौरव और उनकी वर्त्तमान अवस्था का वर्णन कुछ कम कौतूहल जनक नहीं है। वन के अन्दर प्रवेश करते ही आपका मनमधुप ललितलताओं के सुरभित सुमनों से रस सञ्चय करने में लग जायगा। खगजन के कलित

कण्ठों के साथ आप भी आलाप करने लगेंगे। मदमत्त मयूरों का नृत्य आपके मन को अवश्य ही नचा डालेगा। अनेकों विशाल विटपों का विशद वर्णन विशेष भावों का अवश्य ही सञ्चार करा देगा। कनक तन खद्योत की छबीलीछटा को आप कभी नहीं भूल सकेंगे। रमणीक उत्सों की उमग के साथ अवश्य ही बह जायेंगे। साराश में, कि नैसर्गिक चित्रण कवि की चातुरी का विशेष परिचायक है। यह काव्य छोटा है पर अपने ढग का निराला है।

हमें आशा है कि काव्य प्रेमिका मक्षिकाएँ इस पद्यपुष्प से मधु का सग्रह कर सकती हैं। यदि हमारे सहृदयों का कुछ भी मनो रञ्जन हुआ, तो हम अपना अहोभाग्य समझेंगे।

अन्त में हम अपने सुयोग्य लेखक और धुरन्धर कवि श्रद्धेय प० लक्ष्मीधर जी वाजपेयी, सम्पादक तरुण भारत ग्रन्थावली, को प्रस्तावना लेखन के हेतु हृदय से धन्यवाद देते हैं।

—प्रकाशक।

प्रस्तावना

संयुक्त प्रान्त की विंध्याचल की श्रेणियों में चित्रकूट के समान सुरम्य स्थान और कोई नहीं हैं। यहाँ की वनशोभा पहाड़ी दृश्य, सोते झरने, मन्दाकिनी की पवित्र धारा, इत्यादि देख कर दर्शक गण मुग्ध हो जाते हैं। कोटितीर्थ, देवाङ्गना, हनुमानधारा, फटिकशिला, सीताकुंड, अत्रि अनुसूया आश्रम, गुप्त गोदावरी, इत्यादि प्राकृतिक मनोहर स्थलों को देख कर विश्वकर्मा परमात्मा की अनुपम रचनाचातुरी का अनुभव करते हुए दर्शकगण आश्चर्य और आनन्द में तल्लीन हो जाते हैं।

जिन दृश्यों ने परमात्मा की कृपा से कविप्रतिभा का वर पाया है, उनके लिए तो ऐसे प्रकृति सौन्दर्यपूर्ण स्थान मानो कल्पना कल्पतरु ही हैं। यों तो सृष्टि सौन्दर्य का अनुभव सभी दर्शक करते हैं, परन्तु कवि की दृष्टि कुछ निराली ही होती है जिस वस्तु को साधारण दर्शक साधारण दृष्टि से देखता है, कवि उसमें अपनी कल्पना की दृष्टि से कुछ और ही देखता है। कवि प्रत्येक वस्तु की अन्तर्गत सुन्दरता को अपनी मनोहर कल्पनाओं द्वारा देखता है; और प्रभु की अनुपम लीला का अनुभव करके आनन्द में मग्न हो जाता है।

ऐसे कविहृदय कितने हैं ? सम्भव है, जिनको हम साधारण हृदय समझते हैं, उन में भी बहुत से कविहृदय हों, परन्तु ऐसे हृदय तो सचमुच ही बहुत कम निकलेंगे, जो उस आनन्द का अनुभव करके, अपने शब्दचित्र द्वारा दूसरों को भी आंशिकरूप से उस आनन्द का भागी बनावें। अब तक हजारों ही—हजारों ही क्या, बल्कि लाखों व्यक्तियों ने चित्रकूट की यात्रा की होगी, और वहाँ के प्राकृतिक सौन्दर्य से आनन्द का अनुभव किया होगा, परन्तु अपनी लेखनी की कुचिका से उसके शब्दचित्र के चित्रण करने का प्रयत्न दो एक कवियों को छोड़ कर शायद ही और किसी ने किया हो। कम से कम खड़ी बोली की हिन्दी कविता में तो चित्रकूट की शोभा पर कोई कविता हमारे देखने में नहीं आई।

ऐसी दशा में हमारे नवयुवक होनहार कवि विद्याभूषण "विभु" जी ने यह "चित्रकूटचित्रण" लिखकर सचमुच ही साहित्य का बड़ा उपकार किया है। चित्रकूट का यह चित्र यद्यपि देखने में छोटा ही है, परन्तु कविता के सद्गुणों से सुभूषित है, अतएव छोटा होने पर भी बहुत ही मनोहर है। विशेष कर हमारे स्कूल और कालेजों के बालक और बालिकाओं के के लिए, कि जिनको चित्रकूट के समान रमणीय स्थानों के देखने का प्राय बिलकुल ही अवसर नहीं मिलता है, उनके लिए तो यह "चित्रकूटचित्रण" बहुत ही उपयोगी होगा। मर्यादापुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र जी ने जिस मनोहर स्थान में निवास करके उसको

तीर्थस्थान बनाया, अत्रिपत्नी सती अनुसूयादेवी ने जहां सती शिरोमणि सीतादेवी को पवित्र नारीधर्म का उपदेश किया, वीर व्रती ब्रह्मचारी लक्ष्मण भगवान् ने जहां भ्रातृसेवा की पराकाष्ठा दिखलाई, उसी पुनीत चित्रकूट धाम का यह काव्य रसभरित वर्णन हमारे बालक बालिकाओं के हृदय में अवश्य ही धार्मिक भाव उत्पन्न करेगा।

हम "विभु" जी को ऐसी सुन्दर काव्य पुस्तिका लिखने के लिए एक बार फिर बधाई देते हैं, और हृदय से चाहते हैं कि, परमात्मा आपके प्रयत्नों को सफल करे।

दारागञ्ज, प्रयाग।
माघकृष्ण १,
सं० १९९१ वि०

लक्ष्मीधर वाजपेयी।

॥ ओ३म् ॥

चित्रकूट-चित्रण

प्रथम छवि

प्रारम्भ

[१]

चतुर चितेरे की रचनाएँ देख चेतना चकराती।
चर्मचक्षु गति चर्चा क्या जो चरमावधि से टकराती॥
अचलाचल चातुर्य चिरतन अच्युत चरित सिखाते हैं।
चित्ताकर्षक चित्रकूट का चित्रण चारु दिखाते हैं॥

[२]

अतल वितल तल और तलातल पूरित जिसकी माया से।
अन्तरिक्ष के सप्त लोक हैं लालित जिसकी छाया से॥
मुक्त जीव जिसको पाकर फिर और नहीं इच्छा रखते।
उस अखिलेश्वर के हम प्राणी दृश्य मनोहर नित लखते॥

[३]

चिदानन्द आनन्द कन्द की यह विचित्र वसुधा प्यारी।
विन्ध्याचल विख्यात इसी पर बढ़ा रहा शोभा न्यारी॥
दिशा प्रतीची का प्राची से शुभ सम्बन्ध मिलाया है।
अरब और गंगासागर पर सुन्दर सेतु बनाया है॥

[४]

या उत्तर दक्षिण सीमा में भेदक चिह्न लगाया है।
या हिमगिरि अनुरूप दूसरा नग मञ्जुल जड़वाया है॥
या भूधर भूद्वीप मनोहर या यह व्यास खिंचाया है।
जिस पर रवि ने दिन भर में भी आधा वृत्त बनाया है॥

[५]

इसी अचल का एक अंश जो चित्रकूट कहलाता है।
कविकुलगुरु की रामायण में जिसका वर्णन आता है॥
काव्य केसरी-कालिदास ने जिसकी महिमा गाई है।
जिसके गुण की कीर्त्ति कौमुदी तुलसी ने छिटकाई है॥

[६]

जहाँ दूब मखमल पर मृग के छौने दौड़ लगाते हैं।
ललितलतान्तरतरलदलों में कलरव स्वर से गाते हैं॥
किल फेनिल निर्झर गिरि गल में मणिमाला पहनाता है।
मृदुल फूलवासित मलयानिल सब के दिल बहलाता है॥

[७]

जहाँ तपोवन बने हुए थे ऋषि मुनियों के सुखदाई।
जहाँ मिलन श्रीराम भरत का प्रेम रूप भाई भाई॥
जिसके दर्शन को जाते हैं दौड़ आज भी नरनारी।
आकर्षित हमको करती है उसी चित्र की छवि न्यारी॥

[८]

जब तोते को राम नाम का पाठ पढ़ाया जाता है।
त्रेतायुग का दृश्य पुराना वहीं सामने आता है॥
'चित्रकूट के घाट सन्त मिल ईश्वर के गुण गाते हैं'।
ऐसे ही नर वचन सुनाकर कौतूहल उपजाते हैं॥

[९]

उमड़ चली उत्कण्ठा सरिता रुकना अब दुष्कर जानो।
चित्रकूट चुम्बक दिल लोहा खींच रहा सहसा मानो॥
अतः सकल उपयोगी साधन लेकर चलने की ठानी।
मन पहुँचा हम से भी पहले हमें यहाँ तज सैलानी॥

[१०]

चतुर्मास आरम्भ चमकती चपला शोर मचाती है।
चारों दिशा पयोमुच् पूरित रिम झिम झर लगजाती है॥
प्रावृट् से परिवर्तित होकर प्रकृति मोहती है मन को।
चार पाँच हम मित्र चले मिल चित्रकूट के दर्शन को॥

[११]

हमसे रेल अधिक उत्सुक है यह धड़कन बतलाती है।
हो उतावली दौड रही है पल में कोसो जाती है॥
प्रतिधावित तरुओं में होकर इजिन दौड लगाता है।
मानो धारा चीर स्रोत प्रति कोई प्राणी जाता है॥

[१२]

जैसे बालक ईप्सित फल पा हँसता और उछलता है।
उसी भाँति स्टेशन पर इजिन चिल्लाता है, चलता है॥
पंछी त्याग घोंसला जाते वैसे उतर पथिक आये।
यहाँ रेल की बाट देखते पंडाओं के दल पाये॥

[१३]

गगनाङ्गण में बदली है या इस अचला की छाया है।
या अनंत की पड़ी केंचुली सुरसरि कच्छप काया॥
मही-मशक या तूल-राशि है छतरी वरुण लगाता है।
आते अपनी ओर देख कर इंद्र अर्घ्य भिजवाता है॥

[१४]

हार्दिक स्वागत किया सुरों ने न्योछावर करते मोती।
या हँसो के हेतु प्रकृति यह मुक्ताफल उज्ज्वल बोती॥
छींटे देकर बाजीगर या पल में पेड उगाता है।
सरसों जमा हथेली ऊपर मानो वह दिखलाता है॥

[१५]

विकल बालिका सी यह बिजली बारम्बार उछलती है।
धूम पुंज में अग्नि शिखा या बुझ बुझ कर यह जलती है॥
या वामी से रजत सर्पिणी पल पल बाहर आती है।
या कज्जल गिरि की हिम धारा निकल वहीं छिप जाती है॥

[१६]

सौदामिनी नीलअम्बर में प्रकट प्रकट छिप जाती है।
जैसे आशा हृदयस्थल में आती और बिलाती है॥
या घनश्याम सफलता अपनी देख मुस्करा देते हैं।
चित्रकूट को पलक उठा कर कभी कभी लख लेते हैं॥

[१७]

मदाकिनी मदगतिवाली अब उतावली फिरती है।
चचलता के चक्कर में आ वीचि वीचि पर गिरती है॥
वरुण देव का वैभव पाकर निज विभुता दिखलाती है।
चार दिवस की इस प्रभुता पर वह इतना इठलाती है॥

[१८]

तरलिततुङ्गतरङ्ग तोय की तीरों पर वह आती है।
ज्यों प्रसन्नता छलक हृदय से अधरों पर आजाती है॥
सरिता को कर पार शीघ्र ही चित्रपुरी में हम आये।
जो मन आया छोड़ हमें था उसको पाकर हर्षाये॥

[१६]

गुरु वशिष्ठ राजर्षि जनक ने जिसे पवित्र बनाया है।
और प्रकृति ने निज हाथों से जिसका रूप सजाया है॥
लालायित थे बहुत दिनों से उसको आज निहारा है।
कविकाननपावनतीर्थस्थल चित्रकूट यह प्यारा है॥

द्वितीय छवि

चित्रपुरी

[१]

चार बजे ही चित्रवाजने चञ्चु खोल स्वर से गाया।
ऊकालो प्लुत मृदुल सूत्र यह पाणिनिमुनिका मन भाया॥
जैसा जिसको रुचा अर्थ बस वैसा उसने बतलाया।
सीधा सा भोले पुरुषों ने कुकड़ूँकूँ कह समझाया॥

[२]

चेतावनी अचेत चरणि को चरणायुध नित देता है।
अन्धतमसनिद्रा में केवल यही हमारा नेता है॥
उठो उठो वाणीवेला है उठो उठो सोने वालो।
उठो उठो भगवान भजो हे व्यर्थ आयु खोने वालो॥

[३]

उठो उठो कह उठो सवेरे जगको सजग बनाता है।
काण्डत्रय का पाठ भली विधि तीन बार बतलाता है॥
ऊषा वातत्रय सेवन से दोष तापत्रय खोते हैं।
वर्गत्रय उपरान्त मोक्ष के वे अधिकारी होते हैं॥

[४]

ताक रही प्राची पादप से क्या यह वानर विकरोली।
तिमिरासुरदाहकहोली है आँख उषा ने या खोली।।
पड़े हुए हम असमंजस में तब कपोतिनी यों बोली।
भक्ति महारानी की आती यह सज्जित सुन्दर डोली।।

[५]

मन्दाकिनी नहाने सब से प्रथम नारियाँ जाती हैं।
आपस में बातें करती हैं राम गुणों को गाती हैं।।
खग तरुओं पर चहक रहे हैं बन्दर चीं ची करते हैं।
जिसको सुनकर छोटे बच्चे गोदी में भी डरते हैं।।

[६]

लोटा धोती लेकर हम भी मन्दाकिनी कूल आये।
वहाँ राम के भक्त अनेकों राम नाम कहते पाये।।
दान दक्षिणा देकर कोई अपने पाप छुड़ाते हैं।
पावन जल में डुबकी लेकर स्वर्ग सिद्ध हो जाते हैं।।

[७]

तम तस्कर पर एक ओर से दिनपति तीर चलाता है।
रुण्ड तिरोहित जल में कोई मुण्ड तैरता आता है।।
दोनों ओर घाट सुन्दर हैं मन्दिर मन को हरते हैं।
दूर देश के यात्री आकर नित कोलाहल करते हैं।।

[८]

चले उतर कर सीढ़ी से हम मानों तल को आते हैं।
शीतल जल में मज्जित होकर अति आनन्द उठाते हैं॥
कर सन्ध्योपासना घाट पर परमेश्वर के गुण गाये।
जिसने अपनी अतुल कृपा से दृश्य मनोहर दिखलाये॥

[९]

नाना मन्दिर, नाना प्रतिमा, नाना भाँति सजाते हैं।
कहीं आरती, कहीं अर्चना, घटा शंख बजाते हैं॥
बेलपत्र करवीर कुसुम ले दर्शन करने जाते हैं।
एक भक्त आराध्य अनेकों पाइ पाई पाते हैं॥

[१०]

कहीं खुदी हैं पत्थर प्रतिमा शिल्पी गुण बतलाती हैं।
कहीं खिची है रंग मूर्तियाँ चित्रकार यश गाती हैं॥
कहीं राज निर्माण दक्षता भारत कला दिखाती है।
भाँति भाँति की काम्य कुशलता इनमें पाई जाती है॥

[११]

पयस्विनी राघव प्रयाग में निजपय लेकर आई है।
स्वर्गगा के ऊपर उसने सब सम्पत्ति चढ़ाई है॥
दो बहिनों का सगम कैसा पावन और पुराना है।
त्रेता में ज्यों राम भरत का मिलन जगत ने जाना है॥

[१२]

पास पास टीलों पर छोटे ग्राम अनेक बसाये हैं।
ताल शिंशिपा तरु शिरीष के बीच बीच में छाये है॥
नद नाले खाई खन्दक हैं घासों के दल पाये हैं।
शाखामृग से व्याकुल होकर छत पर शूल बिछाये हैं॥

[१३]

पहले तो असुरों का भय था अब प्लवग दुख देते हैं।
कहीं आँख जो झपजाती है झपट वस्तु हर लेते हैं॥
पूजा इनकी करते रहते पूरी और चबेना से।
हे मारुतसुत आकर देखो तंग हुए कपिसेना से॥

[१४]

यहाँ बहुत से राजाओं ने मन्दिर महल बनाये है।
कलश और तोरण आदिक से सम्यक् गये सजाये हैं॥
उनके आगे सुन्दर उपवन कहीं कहीं लख पाते हैं।
कहीं कहीं पर हाथी घोड़े वैभव विपुल बताते हैं॥

[१५]

चतुष्पदों को चरते देखा ग्वालों को गायन करते।
खर को अपने स्वर में देखा पनिहारिन को पय भरते॥
एक छोड़ दो लंका देखी और एक दशमुख देखा।
हाट बाट चल फिर कर देखे, पथ का सब सुख दुख देखा॥

[१६]

चित्रपुरी में विचरण करते समय बहुत ही बीता है।
चल कर अब आराम करें यह लम्बी चौड़ी गीता है॥
चरण शरण में पड़े हुए हैं चलते चलते रुक जाते।
उधर उदर में उथलपुथल है मन कहता कुछ विरमाते॥

[१७]

रज में राम, राम गिरिवर में, राम दरों में पाते हैं।
रस में राम, राम मन्दिर में, राम नरों में पाते हैं॥
जल में राम, राम जंगल में, शाक फलों में पाते हैं।
राम रमा क्या चित्रकूट में सर्व थलों में पाते हैं॥

[१८]

क्यों यह अपना धनुष मनोहर सुनासीर ने सन्धाना।
विश्व प्रबंधक दिव्यसूत्र है या सप्तर्चि सुभग ताना॥
या मयूख मथ कर मेघों ने उत्तम सार निकाला है।
धराधुवों को बांध इसी से सुन्दर झूला डाला है॥

[१९]

सात रंग का इस अम्बर में अद्भुत लगा किनारा है।
या निषंग यह रवि किरणों का, ललित लखुवा प्यारा है॥
तितलीफूलमोर का ब्रुश है या यह तिलक लगाया है।
या रंगों के मिश्रण का यह प्रकृत नमूना पाया है॥

तृतीय छवि

चित्राचल

[१]

हे चित्रकूट नयनाभिराम नर तुझे कामगिरि कहते हैं।
विविध विचित्र कामना लेकर प्रतिदिन आते रहते हैं॥
अपने सिरपर लिये हुए तू देवों के प्रतिनिधि प्यारे।
मर्त्य लोक के मध्य स्वर्ग है यही भक्त कहते सारे॥

[२]

तीर्थस्थल तेतीस यहाँ है साखू तले तटपर पाये।
मानो कोटि कोटि देवों ने तेतीसो ही अपनाये॥
मर्त्यलोक में विचरण करने कभी कभी जो आते हैं।
देख परम सौंदर्य यहाँ का आगे कहीं न जाते हैं॥

[३]

विस्मयकारी चित्रकूट की चित्रोत्तरा पहेली है।
त्याग चँवरथ चित्रा मानो इस उपवन में खेली है॥
सागराम्बरा चित्रित नीचे ऊपर चित्राम्बर प्यारा।
चित्रशिला मणि चित्र पुष्प है चित्र विचित्र यहाँ सारा॥

[४]

चित्रपुच्छ चित्रांग चित्रपद चित्रकंठकी टोली है।
चित्रबाज है चित्रकोटपक्षु चित्रविहंगम बोली है॥
चित्रित पड़े साधु पुजारी मूर्त्ति सुरालय पाते हैं।
चित्रकूट है नाम इसी से नर ऐसा बतलाते हैं॥

[५]

कोई चैत्र रामनौमी को आकर भेंट चढ़ाते हैं।
कोई कार्त्तिक दीपमालिका आकर यहाँ मनाते हैं॥
कोई पशु क्रय विक्रय करते, कोई रोग छुड़ाते हैं।
किन्तु पर्यटन हेतु श्रेष्ठ हम पावस ऋतु को पाते हैं॥

[६]

हम केवल निष्काम भाव से तेरी गोदी में आये।
इतनी दूर खींच कर हमको तेरे अद्भुत गुण लाये॥
प्रकृति यहीं है प्रकृति पुरुष हैं प्रकृति छटा के प्रेमी हैं।
प्रकृति पाठ पढ़ते रहते हैं प्रकृति पुरुष के नेमी हैं॥

[७]

निर्विकार निर्लेप निरंजन जो नारायण नामी है।
नित्य निरीह निरामय चेतन अन्तर्यामी स्वामी है॥
निराकार विभु घटघट वासी निर्गुण अज अविनाशी है।
जो व्यापक सर्वत्र विश्व में चित्रकूट क्या काशी है॥

[८]

चतुरानन होकर भी सुप क्यों हे कामदगिरि बतला दे।
लेटे तेरे भक्त पथ में कुछ कह कर मन बहला दे॥
राम और सीता की सुध में क्या तेरे दिन जाते हे।
अब मुखारबिन्दों पर वैसे नहीं मधुर मँडराते हे॥

[६]

प्रदक्षिणा प्रारम्भ हुई अब चरणपादुका तक आये।
तुलसीदास गुफा में बैठे राम नाम जपते पाये॥
पिघल गया पत्थर भी तब था हिय भी अब न पिघलते हैं।
इस प्रकार भावों को ले हम लक्ष्मण टीले चलते हैं॥

[१०]

आगे राम झरोखा बैठे सब का मुजरा लेते हैं।
जिसका जैसा दाम यहाँ पर वैसा ही फल देते हैं॥
चल कर ताल चौपड़ा देखा वहाँ नहाते नर पाये।
चले जहाँ से पहले हम थे वहीं लौट कर फिर आये॥

[११]

जिसने शिविका रख क धे पर भूषण मान बढ़ाया था।
आगे बढ़ कर जिसने रण से कभी न पैर हटाया था॥
उसी बुँदेला छत्रसाल की च द्र कुवरि प्यारी रानी।
कीर्ति परिक्रमा पक्की कर वह छोड़ गइ निज सहदानी॥

[१२]

क्लेश हर लिये दर्शक गए के वह हरि दर्शन की प्यासी।
माने उसकी अचल भक्ति ने बाँध लिये सब सुरवासी॥
जब तक चित्रकूट का घेरा तब तक चन्द्र कुँवरि रानी।
अमर रहेगी इस अचला पर कथा जगत ने यह जानी॥

[१३]

दर्शक दूर दूर से आते चना आदि बिखराते हैं।
गाये, कपि, लगूर चबाते सहज बैर बिसराते हैं॥
पशुओं में ही पुराचार वह कुछ कुछ पाया जाता है।
पंडों की छीना झपटी का दृश्य न हमको भाता है॥

[१४]

इनके पंजों से बचना अति दुस्तर सा हो जाता है।
रिक्ताञ्जलि जो अवगत होती बन्दर घुड़की खाता है॥
रङ्क अङ्क से वङ्क सभी हैं कहाँ पङ्क मुक्ता पाता।
नर वानर में अन्तर क्या यह भेद यहीं जाना जाता॥

[१५]

जो यात्री अनुचित उदारता आकर यहाँ दिखाते हैं।
आलस भिक्षावृत्ति दासता सब को वही सिखाते हैं॥
नहीं उन्होंने महादान की सच्ची महिमा जानी है।
धर्म कर्म में जो देता है वही भक्त वर दानी है॥

[१६]

परिकमा माला में गुम्फित अगणित मन्दिर मोती हैं।
जिनकी किरणें विभावरी मे जगमग जगमग होती हैं॥
विविध भाँति के यहाँ चढ़ावे आकर भक्त चढाते हैं।
छत्र लगाये तरु तमाल के शोभा अधिक बढ़ाते हैं॥

[१७]

सोपानों से ऊपर चढ़कर हमने शैल शिखर देखा।
सघन छुदन छाया के अन्दर कोटितीर्थ सुन्दर देखा॥
झरने से झर झर झर निर्मल जल दो कुडों में आता है।
पथिक पिपासा अपनी स तत आकर यहाँ बुझाता है॥

[१८]

देवागना पुन हम पहुँचे दृश्य वही सब दिखलाये।
शिलाखड बरबड राह में पडे हुए हमने पाये॥
देवागना कहाँ है हा ! वे जिनका यश कवि गाता है।
वारागना वास वसुधा पर नित बढता ही जाता है॥

[१६]

स्वर्ग शिखर पर चलते चलते पहुँचे सुभग रसोई में।
कौतुक ! सीता दूर खडी हैं और बेलना लोई में॥
भोजन के हित खोद रहे हैं कुछ बाबा जी कदों को।
हनूमानधारा पर आये देखा सब छलछदो को॥

[२०]

मनुजादो को मरा जान कर महावीर थक कर माने।
करते हैं आराम यहाँ पर यही बात निश्चय जानो॥
वाम पार्श्व में झरना गिर कर तीन कुंड भर देता है।
कदली तरुओं को सिंचन कर वापी आश्रय लेता है॥

[२१]

नीचे तरु हैं, ऊपर तरु हैं, तरुओं की बहु छाया है।
इन शीतल कुंजों में रह कर काया ने सुख पाया है॥
वृद्ध विचारे रहे बीच में बालक भी कुछ घबराये।
सोपानों से उतर उतर कर मर्त्यलोक में हम आये॥

[२२]

अति मनोज्ञ मदाकिनि तट पर रुचिर चाँदनी सी मानो।
स्फटिकशिला वर बिछी हुई है खड़ा कौन वह पहचानो।
वीरासन आसीन करों से मछली राम चुगाते हैं।
जीवों के प्रति प्राणि मात्र के उर में दया उगाते हैं॥

[२३]

रामधाम से आगे चल कर फिर प्रमोद बन में आये।
हे आमोदप्रमोद राम के तुझे देख हम हर्षाये॥
खेल रहे अद्यापि यहाँ तरु अपने अपने पत्तों से।
कहीं सघनता में मधुमक्खी गाती फिरती छत्तों से॥

[२४]

सीता कुंड पहुँच कर सब ने सीता-चरण चिह्न देखा।
उटज और कन्दरा निवासी लिया साधुओं का लेखा॥
विद्वानों की बातचीत से आह्लादित मन होता है।
किन्तु दम्भियों के रहने से ठौर अपावन होता है॥

[२५]

क्या है यही अत्रिका आश्रम जहाँ मुनीश्वर आते थे।
ब्रह्मज्ञान का ध्यान जहाँ पर सत्संगति से पाते थे॥
तपोभूमि क्या यही तपस्वी जहाँ तपस्या करते थे।
सहज वैर तज जहाँ नकुल अहि धेनु मृगेन्द्र विचरते थे॥

[२६]

वही वही यह भूमि जहाँ पर राम और लक्ष्मण आये।
अनसूया ने वैदेही को पातिव्रत-गुण बतलाये॥
मदाकिनी शान्ति की सरिता जिस आश्रम से बहती है।
जो पूर्व स्मृति पाठ निरंतर तारस्वर से कहती है॥

[२७]

मदाकिनी स्रोत को देखा सचमुच दृश्य निराला है।
बतलादे हे प्यारी सरिते! तेरा देखा भाला है॥
यह अन्तर क्यों आज हुआ है सूना क्यों दिखलाता है?
वह बोली क्या पूछ रहे हो हृदय उमडता आता है॥

[२८]

जा देखो उन गिरि नयनों को जिनमें से मैं बहती हूँ।
तुम्हें बताऊँ और भला क्या स्वय व्यथा अति सहती हूँ॥
अत्रि और अनसूया सीता !!! कैसे इन्हें भुलाऊँ मैं।
होगा अति सौभाग्य पुन जो इनके चरण धुलाऊँ मैं॥

[२९]

चले गुप्त गोदावरि तट को यहाँ विचित्र कहानी है।
थोड़ी सी चल पुन अचानक सरिता कहाँ बिलानी है॥
सन्त महन्त पुजारी कृति को प्रकट रूप से आना है।
अधोवास इससे अच्छा है उसने अब यह ठाना है॥

[३०]

रामकुंड में लोग नहाते दीपक पुन जलाते हैं।
लेकर उनको अन्धकार में सुर दर्शन को आते हैं॥
गिरि कन्दर के अन्दर निर्झर मौन साध बैठे सारे।
दिन में भी अन्धेर यहाँ है, कौन कहे कौतुक, हारे॥

[३१]

भरत हृदय सा भरत कूप है निर्मल शीतल जल वाला।
अति गम्भीर विशाल वदन है हरता है ईर्ष्या ज्वाला॥
भरत अलौकिक चरित स्मारक भ्रातृ स्नेह बहाता है।
द्वेष भाव से भरा मनुज क्यों पीता और नहाता है॥

[३२]

हे चित्रकूट ! जो राम यहाँ फिर आ देखें कौतुक सारा।
निश्चय तुझे दुखा दे गे वे बहा आँसुओं की धारा॥
लेकर तेरी आड अधर्मी ठगते जाल बिछाते है।
सत दीन भूखों मरते हैं ढोंगी बैठे खाते है॥

[३३]

सीता सती तथा अनसूया यहाँ कहाँ जो फिर आवे।
ललनाओं की लीला लख वे तुरत धरा में धस जावे॥
हमगवान ! मयूरसारिणी अब तो यहाँ विचरती है।
कहाँ पुरधी ? यहाँ पु श्चली कभी न अघ से डरती हैं॥

[३४]

ऊँचे होकर हे गिरिश्रृङ्गो ! श्याम घने में छिप जाओ।
हे तरुपुंजो ! श्वासथाम लो रुदन करें खगमृग ! आओ॥
हे सरिते ! तू भी रोती जा जब तक तेरा जीवन है।
आर्त्तस्वरों में कातर क्रन्दन सुनो सदय ! जब तक तन है॥

[३५]

एक समय था चित्रकूट में भील शील दिखलाते थे।
इस मयक में यह कलक भी नहीं नाम को पाते थे॥
'विभु' इतना क्यों विलख रहे हो सुनो गगन क्या कहता है।
इस दुनियाँ का ढङ्ग यही है रङ्ग बदलता रहता है॥

[३६]

कनक रजत से कहीं ताम्र से मन हरते हैं नभचारी।
धूमिल धूसर पीले नीले असित गुलाबी छबिधारी॥
कहीं गन्धकी नारगी है हरे बैंजनी रतनारे।
विविध रङ्ग का मिश्रण हमको दिखलाते बादल प्यारे॥

[३७]

ये सध्या के अबर डबर अष्टधातु के गिरिवर हैं।
कोष पुज नाना रत्नों के या नभमीन मनोहर हैं॥
या रङ्गों के पीपे हैं जो फूलों पर बरसाते हैं।
या पृथ्वी के रङ्ग वहाँ हैं अत यहाँ तम पाते हैं॥

[३८]

मगलचौके विजयकेतु कुथ या रविजाल बिछाये हैं।
गगनफूल जीवाकुल थैले काँच फलक जड़वाये हैं॥
या नदनवनके खगनदन या चित्रित पशु चरते हैं।
या उस नटनागर के पट हैं जो नित लीला करते हैं॥

[४]

जिनके तले बनाई कुटियाँ जिनके मृदु फल खाये थे।
ले प्रसून जिनके पहनाये जिन भीलों को भाये थे॥
उन वृक्षों से, उन बेलों से, उन किरात सन्तानों से।
परिचित हो ले वेग कल्पने ! पद अंकित शुभ स्थानों से॥

[५]

प्रतिभे ! कर प्रवेश तू अपना इस वन की गहराई में।
अन्तरिक्ष के तुंग शिखर पर अन्तस्थल की खाई में॥
वन्द कली के किंजल्कों में किसलय की अरुणाई में।
पशुपक्षी निस्वन विचरण में हरियाली तरुणाई में॥

[६]

खुलें हमारे द्वार हृदय के ऐसी दे हमको ताली।
तेरे बल हम बने हुए हैं देवि ! महा प्रतिभाशाली॥
अन्तर्हित भी दृश्य प्रकट हों नभ में हों जैसे तारे।
कवियों के तू बड़े काम की तेरे ही कौतुक सारे॥

[७]

सूर सूर तुलसी शशि तू ने काव्य गगन में चमकाये।
भूषण भूषण देव देव सम केशव केशव कहलाये॥
चन्द और मतिराम बिहारी दास कबीर रत्न तेरे।
भारतेन्दु सेनापति सुन्दर पद्माकर तेरे चेरे॥

[८]

जैसे मेल समीर सुरभि का स्वान्त कली खिलाता है।
उच्च कल्पना प्रतिभा सगम कवि को सुधा पिलाता है॥
दूर आवरण हो जाते हैं दिव्य चक्षु खुल जाते हैं।
जैसे सलिल और साबुन से सारे मल घुल जाते हैं॥

[९]

बढ़ती जाओ तुम भी अँखियो ! जा कर देखो हरि लीला।
विविध रङ्ग का मेल यहाँ है लाल कहीं नीला पीला॥
कहीं एक ही उलझ लता से अधिक न समय बिता देना।
आज नयन भर निरख अरी तुम जीवन सफल बना लेना॥

[१०]

चकित चित्त उत्कण्ठित नयन को जिधर जिधर ले जाते है।
हरी हरी उत्तुंग भित्तियाँ उधर उधर ही पाते हैं॥
बीच बीच में वातायन से वनविहग आते जाते।
अन्तर्हित हो चहक रहे हैं तरुपल्लव मानो गाते॥

[११]

अहो लता लवली कैसी है फूली नहीं समाती है।
गन्ध चतुर्दिक बिखराती है प्रेम प्रवाह बहाती है॥
इसकी इस मञ्जुल कलिका ने आँख हमें लख खोली है।
पास बुलाने को ही उसमें श्यामा चिड़िया बोली है॥

[१२]

जो तरु पहले खड़े हुए थे नंगे दीन भिखारी से।
कञ्चन पत्राभूषण पहने लगते हैं छविधारी से॥
मन को कैसा लुभा रही है किसलय की यह अरुणाई।
क्या दिनकर से डर कर ऊषा पत्तों में छिपने आई॥

[१३]

शोभा सिंधु सदन सौरभ के रसराजि रस राशि अहो!
हे वनजीवन प्राण प्राण के लोचनफल हियहार कहो॥
हे कविकीर्तिकलेवर मनधन कोमलता के कोष मिले।
क्या निर्जन में सुमन खिलाने प्रेमपुंज हे सुमन खिले॥

[१४]

परमानन्द प्रेम के प्याले प्रकृति पालने प्यारे हो।
अंधी माया के अम्बक हो अम्बर अम्बर न्यारे हो॥
सरस काव्य रवि किरण सार या उज्वल यश कहलाते हो।
हँसने और खेलने शिशुओ! मन सब का बहलाते हो॥

[१५]

नीरस जग यह हो जाता सुम! तुम्हें नहीं जो हम पाते।
नीरव भाषा में तुम अपनी गुप्त भावना बतलाते॥
अलिकुलसकुलमञ्जुलनीरज ताला के तुम तारे हो।
निर्जर नर कृमि कीट नाग खग पशु पक्षी के प्यारे हो॥

[१६]

पेशी देख यही लगता है अभी बोलने वाली है।
या निद्रा के बाद मुकुलिका नेत्र खोलने वाली है॥
बीजों की माला सी लटकी कैसी सुन्दर फलियाँ हैं।
या मारुत सञ्चालक नलियाँ वृहत् सुमन की कलियाँ हैं॥

[१७]

सारी हरी पहन कर मानो प्रकृति छटा दिखलाती है।
नाना विकसित कुसुम खचित हैं रचना कही न जाती है॥
ज़रदोजी कमख्वाब सालिमा गोटा सुघ्घो तितली हैं।
चञ्चलता ही भिलमिल भिलमिल,कहीं कली जो निकली हैं॥

[१८]

सौरभ शीशी है वे मानो ले ले पवन लगाता है।
फिर भी कमी नहीं पड़ती है कोष भरा ही पाता है॥
विहँस कहा कलियों ने सुन लो पवन ! तुम्हीं थक जाओगे।
जीते जी पर हमें न हटते इससे पीछे पाओगे॥

[१९]

फूल फूल पर तितलीप्यारी अति स्वच्छन्द विचरती है।
यह अधीरता ! यह चञ्चलता ! ठहर अरी क्या करती है॥
लख तेरी कमनीय कान्ति को कोमल कुसुम बिछाया है।
विरम यहीं नयनों भर देखें पखों में क्या माया है॥

[२०]

हे सौन्दर्य्यागार ! रूपखनि ! सुषमासार मनोहारी !
हे उपवन की अतुलितशोभा ! हे सजीवछविविनुधारी !!
दिव्यदूतियो ! भव्यभूतियो ! विधिविचित्रकृति ! चपलाओ !
विचरणशीलाकमलपॅखुरियो ! प्रेमपुतलियो ! बहलाओ !!

[२१]

अहो प्रजापतिचित्रप्यालियो ! बहुविध रञ्जितकलिकाओ !
हे सस्मृतिमोहनिमालाओ ! सुमनविहारिणिरसिकाओ !!
हे द्रुतगामी मानसगतियो ! हे परिवर्त्तनशीलाओ !
हे क्षणभङ्गुरमगलध्वनियो ! हे अस्थायीलीलाओ !!

[२२]

फूलों में पँखुरी पत्तों में तुम पत्ती बन जाती हो।
इस विधि रिपु से प्राण बचाकर नित पराग छितराती हो॥
तुम फूलों पर बलि जाती वे हृदय चीर बिठलाते हैं।
देखें इन तितली फूलों में कौन अधिक बढ जाते हैं॥

[२३]

विटपावली फली फूली है लतापुज मञ्जुल छाये।
वातायन युत कुज मनोहर कहीं देखने में आये॥
गु जित भृग हसित पुष्पो पर रस लेने को आते हैं।
कुआ न प्यासो के घर आता प्यासे उस तक जाते हैं॥

[२४]

कलित कलाप कलाप तान कर नर्तक बना कलापी है।
मेघ-मृदङ्ग-गभीर-गर्जना व्योमस्तल में व्यापी है॥
सौदामिनी मञ्जु मुरली भी कभी कभी सुन पाते हैं।
मगलाचार मोरनी गाती उत्सव जीव मनाते हैं॥

[२५]

मेचक हैं या नील गगन में इन्द्र-चाप के तारे हैं।
या हैं सुमन विचित्र चित्र या बहु रगी अति प्यारे हैं॥
मोर मुकुट या राज छत्र के मञ्जुल रत्न मनोहारी।
सहस्राक्ष या निरख रहे हैं नैसर्गिक शोभा न्यारी॥

[२६]

या मणिधारी फणियो ने ही हन्त! व्यालभुक् घेरा है।
इसीलिये उनसे बचने को लगा रहा चकफेरा है॥
किन्तु कहाँ बचने पावेगा पीछे पडे कलापी के।
जैसे पाप लगे फिरते हों पीछे पीछे पापी के॥

[२७]

या वह तान वितान प्रकृति ने चित्रित जडी किनारी है।
या कूचि का कली रँगने को या कुवलय की क्यारी है॥
या सज्जित यह पुष्प प्रकर है पखा पवन चलाने को।
चन्द्रभ्रमण का मानचित्र या शिष्यों के समझाने को॥

[२८]

अहो कलापी हुआ कला पी सचमुच पूर्ण कलाधारी।
नीलकण्ठ है शिखा अनोखी विधिकी रम्य चित्रकारी।
रंजित-रूप कलित-केका है नयनानन्द नृत्य तेरा।
कहाँ चला मन चुरा शिखण्डी भाता नहीं कृत्य तेरा॥

[२६]

फल पत्तों से ओतप्रोत यह ओत वृक्ष मन भाता है।
मीठे फल बूँदी के मोदक रुचिकर दिखा लुभाता है॥
सीता-स्मृति में लगा दिया है सीताफल का भंडारा।
नहीं मनुष्यों को ही केवल पशुओं को भी है चारा॥

[३०]

फूल मिष्ट खाने को देते एव तना जलाने को।
तेल फलों के द्वारा हमको विविध काम में लाने को॥
तन मन धन अर्पण कर नरके बने हुए हैं अनुरागी।
ढूंढे से भी कहाँ मिलेंगे इन मधूक से सब त्यागी॥

[३१]

भद्र जनो की भाँति खड़े ये भद्रक भूति दिखाते हैं।
सन्त जनो की भाँति निरन्तर पर-उपकार सिखाते हैं॥
यद्यपि कटु हैं रुजहारी हैं फल मीठा देने वाले।
रोकर भी औरों के दुख को ये ही हर लेने वाले॥

[३२]

पीतस्तवक पीतमणि मानो हरित शिला पर फैलाये।
घटा अँधेरी देख इन्हें ये कागचोर लेने आये॥
आपस में जब फूट हुई तो काँव काँव करते भागे।
निम्ब ककच पत्तों से डर कर अन्य द्विजों ने ये त्यागे॥

[३३]

दो सहकार सहोदर मानो या दोनो सहकारी हैं।
बचपन के साथी दोनो हैं लम्बी भुजा पसारी हैं॥
मानो मिले बहुत दिन पीछे गाढ़ालिंगन करते हैं।
कलरव मिस वे बातचीत से पथिकों के मन हरते हैं॥

[३४]

चिर सञ्चित फल लुटा चुके हैं भला कौन ऐसा दानी।
वार्षिक यज्ञ किया करते हैं केवल पेय पवन पानी॥
कोयल बैठी हुई डाल पर किसकी महिमा गाती है।
गये हुए उन सफल दिनों की फिर से याद दिलाती है॥

[३५]

पिक अपनी काकली सुनाकर मोह रही सारे प्राणी।
हाँ, रसाल के सरस फलों से हुई मधुर तेरी वाणी॥
शेष स्वरों को भूल गई क्या पञ्चम स्वर जो अपनाया।
कुहू कुहू क्या कहती है कह जो तेरे जी में आया॥

[३६]

चचल चारु चमूरु चतुर्दिक चलते और विचरते हैं।
जगल में मगल करते हैं चैन चौकड़ी भरते हैं॥
बारहसिंगा दो वृक्षों को लिये शीश पर फिरता है।
गुल्म लताओं में घिरता है उलझ उन्हीं में गिरता है॥

[३७]

बिन्दु बिन्दु श्रवस्यन्दन होकर गर्त अनेको भरते है।
सर कासार पुनी के उद्गम अविरल झरने झरते है॥
तृणहर शुद्ध सलिल सोते या रामस्मृति में रोते है।
नयन नीर से पूर्व पुरुष के चरणचिह्न को धोते है॥

[३८]

नीलगाय अपने बच्चों को छिप छिप दूध पिलाती है।
बीच बीच में नई कोपलें लेकर उसे खिलाती है।
मरमर ध्वनि से चौकन्नी हो चौंक कुलाचें भरती है।
प्रबल वेग चोटी को छूती पग न धरा पर धरती है॥

[३९]

हे अचार के विटप! आज क्यो अनाचार दिखलाते हो।
आगन्तुक का स्वागत करना इसी भाँति सिखलाते हो"
पहले लाल हरी फिर होती फिर लोहित जो हो जाती।
क्या न मधुरस्वादिष्ट चिरोंजी अतिथि काममें वह आती॥

[४०]

बद्री तरु ये झुके हुए हैं होकर फलों से भारी।
पशुओं को आकर्षित करती छवि इनकी अद्भुत न्यारी॥
कटक तीखे छिपे हुए हैं सघन कुंज हरियाली में।
दुख ही दुख पाये जाते हैं ज्यों माया मतवाली में॥

[४१]

ताड लिया है ताड वृक्ष ने जग में बहुत लुटेरे हैं।
जहाँ तहाँ दिखलाई देते लग ठगों के डेरे हैं॥
इसीलिये अपनी लघु पूँजी लिये शीश पर रहता है।
फिर भी इसी द्रव्य के कारण दुःख अनेकों सहता है॥

[४२]

यह तरंगिणी बनी हुई है नागिन बहु जिह्वावाली।
लोल लोल लहरों से जिसने किये पुलिन दोनों खाली॥
लिये अनेकों जन्तु उदर में रसना बहुत लपलपाती।
इट जाओ नतु निगल जायगी इधर कुटिलगति है आती॥

[४३]

लम्बी हरी मुसैल खेत में झोंको से झुक जाती है।
बिखर गई मोती की माला मानो उसे उठाती है॥
या रिपु से भयभीत पवन को अपने अङ्क छिपाती है।
या शरणागत आगन्तक को पलकों पर बिठलाती है॥

[४४]

सरररररर फुंकार मारता कौन जीव यह आता है।
पवनाशन ! हाँ जीवाशन है अ तुराज का भ्राता है॥
वाम हुआ वामी में रह कर भूला शुद्ध पवन पीना।
जिसकी लाठी भैं स उसी की वल्मीको का घर छीना॥

[४५]

आहट पाकर शशक विचारा भाड़ी से भग जाता है।
शब्द ग्राहिका प्लेटे दोनो चारों ओर घुमाता है॥
ध्वनि लखने को दूरबीन दो ध्वजा युगल मन हरती हैं।
ताल ताल पर दो पुत्तलिका नृत्य निरन्तर करती हैं॥

[४६]

लटक रहे लंगूर डाल पर लांगूलों को रख दल में।
पके हुए फल से गिरते हे कभी कभी नीचे जल में॥
किसी किसी ने बालधि अपनी जो नीचे लटकाई है।
मानो तरु पर चढ़ने को यह रस्सी सुदृढ़ बनाई है॥

[४७]

लता सलिल पर फैली फूली या शिशु अंकित पट्टी है।
या बुलबुले उठा करते हैं सब धोखे की टट्टी है॥
फूलदार सर की पगड़ी है या यह छींट बिछाई है।
कुसुम नहीं लाजा बिखरे हैं चिड़िया चुनने आई है॥

[४८]

लेने थाह चली पनडुब्बी किन्तु बीच से लौटी है।
लिये चोंच में जाती है क्या केवल उदर कसौटी है॥
तैर रहे जो पक्षी जल पर नहीं जानते गहराई।
एक पैर से खड़े हुए हैं बक भक्तों की बन आई॥

[४६]

अरी विषमते ! बता कहाँ पर तुझे नहीं हम पाते हैं।
ऊँच नीच स्वामी सेवक में भेद भाव बतलाते हैं॥
पाँचों अँगुली कहाँ एकसी प्रभु ने कभी बनाई है।
पर्वत और पठार कहीं हैं कहीं खादियाँ खाई हैं॥

[५०]

बालों का यह ढेर कहाँ को लुढक लुढक कर जाता है।
चुप चुप चुप भालू ! भालू है दिन में भी न दिखाता है॥
शाकाहारी पर हिंसक है दुनियाँ से यह न्यारा है।
तरुपर उलटा चढ़जाता है बचना कठिन हमारा है॥

[५१]

मञ्जुभाषिणी चीलें अपनी सीटी मधुर बजाती हैं।
निष्ठुरहृदया जो पाती हैं उसको ही खा जाती हैं॥
मृत्युसखा से गृध्र कक ये बैठे घात लगाये हैं।
श्येनबाप ने अपने कौशल दुर्बल पर दिखलाये हैं॥

[५२]

भरा हुआ जाने क्या जादू जो तन से छू जाती है।
खुजली ही खुजली कपिवल्ली ! तू पल में फैलाती है॥
इस कुँदरू ने कैसा सुन्दर अपना जाल बिछाया है।
और क्षीरपर्णी सुरसा ने फैलाई निज काया है॥

[५३]

स्वर्णफूल ! निर्गन्ध शूलयुत क्या हमको बहकाते हो।
नाम बड़े दर्शन थोड़े हैं भोले ही को भाते हो॥
मादकता नस नस में व्यापक सहचर भग भवानी के।
शकर भक्त अत अपनाते पास रहो तुम ध्यानी के॥

[५४]

कुसुम हीन यद्यपि यह तरु है किन्तु मधुर फल वाला है।
सुन्दर सुरभित पुष्पलता की पड़ी गले में माला है॥
एक दूसरे की आपस में शोभा नित्य बढ़ाते हैं।
सदा मेल से वश फूल फल सब को सुख पहुँचाते हैं॥

[५५]

कहाँ अन्य तरु हरा वर्ण यह कहाँ खानि का सित चूना।
फिर भी तुम दोनों से मिलकर रग दिखाते हो दूना॥
अधमजनों की भाँति पराया अपना नहीं निरखते हो।
खदिर तुम्हीं हो धन्य धरा पर मुख की लाली रखते हो॥

[५६]

घुरघुरघुर घुर्राता जाता यह वराह का दल देखो।
जड़ें खोद कर खाता जाता अतुलित इसका बल देखो॥
जो कोई सम्मुख पड जाता उसका कुशल नहीं जानो।
आगे निकले हुए द'त ही तीव्र शस्त्र इसके मानो॥

[५७]

कहीं कुरैया पर गौरैया कुल्लू पर उल्लू बोला।
पास कहीं महुआ के कहुआ लटका चतुर बया भोला॥
अपत करील सकण्टक थूहर लम्बकर्ण सागौन खड़े।
तून तूनथा तो क्या लखकर हुए अशोक अशोक बड़े॥

[५८]

जम्बू तरु विचित्र शोभा है लटके फल काले काले।
या मकरद पान करते हैं ये भौंरे रस मतवाले॥
उन्हें हरियलों ने पकड़ा था पड़े आन के अत्र लाले।
या वर्षा ने हरे पटल पर ये काले धब्बे डाले॥

[५९]

मन मतङ्ग सा कभी भूमता फिर कुरङ्ग सा भग जाता।
कभी भृङ्ग सा तुङ्ग श्रृङ्ग पर उड फूला से बहलाता॥
सुन सारङ्ग-गर्जना सहसा रङ्ग भङ्ग हो जाता है।
रुकी तरङ्ग सङ्ग फिर आता अङ्ग! व्यङ्ग बतलाता है॥

[६०]

तेंदू तले तेंदुआ कोई जो हमको मिल जावेगा।
बढ़ो न आगे और नहीं तो उदर-दरी पहुँचावेगा॥
आमिष भोजी अन्य जन्तु या जो झाड़ी से निकलेगा।
जानें किसको पजे में ले अनायास ही निगलेगा॥

[६१]

तमसावृत हैं कही कन्दरा जिनमें वन पशु सोते हैं।
सदा उजाले से डरते हैं दुस्स्वभाव जो होते हैं॥
कहीं बबूल शूलधारी हैं कहीं रेमजे झरबेरी।
कॉस पथों को रोक रहे हैं व्यर्थ लगाते हैं देरी॥

[६२]

सर्पाकार लताओं ने मिल तरुओं को कस डाला है।
कहीं कहीं पर तन्तुनाभ ने पूरा पतला जाला है॥
शुक निकुरम्ब चौंक कर सहसा ऊपर जो उड़ जाता है।
मानो नभसागर पर कोई हरा खेत पलराता है॥

[६३]

सरसीजल में खेल रहे हैं निचुल निरन्तर लहरों से।
छपछप सुन उत्ताल स्रवित हो हर्ष नीप के चहरों से॥
श्रीफल बञ्जुल बकुल झाँक कर निज छवि लखते कूलों से।
कर्णिकार क्यों देख रहे हैं अपने लोहित फूलों से॥

[६४]

वृश्चिक अपना भाला लेकर हरदम उद्यत रहते हैं।
इन दुष्टों से पीड़ित होकर नर नारी दुख सहते हैं॥
काल रूप दाहक दुखदायी प्राणों के ग्राहक होते।
दश दाह से जन व्याकुल हो विपुल वेदना से रोते॥

[६५]

थोड़ी सी मुसकान मुकुल के ज्योंही अधरों पर आई।
पवन चला चुपचाप चुराकर पश्चिम दिक् खाली पाई॥
अरुणानन चण्डांशु हुआ लख उसकी यह अनीति सारी।
जल तलशायी तुरत बनाया दे उसको धक्का भारी॥

[६६]

देखा उसे लोकलोचन ने नहीं जाल में आता है।
कभी डूबता कभी उछलता फिर ऊपर पलराता है॥
कूद पड़े सत्वर पानी में वीर बात पर अड़ते हैं।
शतश सूर्य पवन से मानो लहर लहर पर लड़ते हैं॥

[६७]

हरड़ बहेड़े और आँवले कहीं कहीं मिल जाते हैं।
यह त्रिदोषहर त्रिफला मानो प्राकृत दोष हटाते हैं॥
विधि की इस प्रयोगशाला में जड़ी बूटियाँ छाई हैं।
अमृतोपम औषधियाँ इसमें नानाविध उपजाई हैं॥

[६८]

पुलकित पनस कहीं पर अतिशय गुडहल कुडल धारी है।
वश वश वानीर तीर पर सहयोगिता प्रचारी है।
लिपट गये पाटल से कितने असित नाग फन फैलाये।
ईश्वर ही इसका रक्षक है कौन जन्म के फल पाये॥

[६९]

माधव सा यह मञ्जुल धव है उद्धव सा वह चलदल है।
गूलर चिंचा गोप गोपियाँ मधुवन सा यह वनथल है॥
कालिन्दी सी पयस्विनी है गोवर्धन सा गिरिवर है।
श्याम धेनु सी नीलगाय हैं मुरली रव सा अलिस्वर है॥

[७०]

तेरे फूलो ने हरली है कुन्दों की शोभा सारी।
फलने पाटल की सुन्दरता—पाटबार तू है भारी॥
अत करौंदे तेरे सिर पर दो दोषों को डाला है।
छिपे छदन में धकिल तेरे और अम्ल रस वाला है॥

[७१]

युग्म मूर्ति से युगल महीरुह अहो मेल के दल छाये।
किसी ओषधी के लेने ये स्वर्गवैद्य मानो आये॥
उस तरु पर झाडी ने कैसा निज अधिकार जमाया है।
अमर बेलि का सा पद ऊँचा मानो उसने पाया है॥

[७२]

उन्नत शीश विशाल बाहु है वनश्रीसहित विराजा है।
विविध विहगम पालनकर्त्ता वट वृक्षों का राजा है॥
लटक रहीं लम्बी शाखाएँ या श्रावण के झूले हैं।
उसके तले पहुँचते ही हम पथ का श्रम सब भूले हैं॥

[७३]

तृण आच्छादित नगमाला हैं हरी हरी नगमाला हैं।
कहीं निकुंज पर्णशाला हैं कहीं मधु खगमाला हैं॥
आलवाल से ताल मनोहर या पय पूरित प्याले हैं।
गिरि की सकल धरोहर मानो ये ही धरने वाले हैं॥

[७४]

नृत्यकला में निपुण निरन्तर निर्झर नर्त्तन करते हैं।
द्रुतगति धीरे सरल वक्र चल उछल कूद मन हरते हैं॥
कल कल करते गिरते पड़ते गिरि से स्वच्छ उतरते हैं।
फिर इन बिन्दु मोतियों को ले गोद सरों की भरते हैं॥

[७५]

चरमाचल पर चित्रभानु ने चल कर लिया सहारा है।
चलो चलो अब लौट चलें बस तम ने पैर पसारा है॥
या पावस की घटा देख कर हंस मानसर जाता है।
चित्रकार या चित्र खींचने पट काला फैलाता है॥

[७६]

जीमूतों ने चुरा लिये हैं रजनीपतिके मणि सारे।
उन्हें ढूँढते फिरते हे ये यहाँ ज्योतिरिङ्गण प्यारे॥
गुल्म लताओं में, कुञ्जों में, सघन पल्लवों में, सर में।
ये चर विचर रहे हैं तम में लिये दीप अपने कर में॥

[७७]

प्रहरी प्रकृति महारानी के पारिजात के या फल हैं।
कल्पलता के कलित कुसुम हैं या ये सञ्जीवनि दल हैं॥
अस्ताचल से रविदर्पण या प्रबल वेग से टकराया।
या आशा के रुचिर प्रलोभन या उदकाइल घिर आया॥

[७८]

या छदनों का मधुर हास्य है निशा सुमन भर गिरते हैं।
सरल सुकृत सकरुप खलों के मुक्त जीव या फिरते हैं।
तारावलि अनन्तमणिमाला मेरुज्योति या छायी है।
चित्रकूट के दर्शन करने दीपमालिका आयी है॥

[७९]

रवि शशि तारागण के होते काम न कोई आया है।
तूने ही खद्योत सार्थक अपना नाम बनाया है॥
तेरा ही आलोक तिमिर में अवलम्बन चिन्ताहर है।
प्रभु प्रताप से लघु पतंग भी बना हुआ आभाकर है॥

[८०]

मातृभूमि हे सजले सफले ! तेरे दृश्य निराले हैं।
हम बच्चों के लिये खिलौने तूने ये रच डाले हैं॥
तेरी रज में मिल कर जब हम जननि! परम पद पाते हैं।
उन मीलित नयनों में अम्बे ! तेरी छवि ले जाते हैं॥

[८१]

ऐसे ऐसे चित्र बनाये धन्य धन्य उस धाता को।
जिसके तन पर बने हुए हैं धन्य धन्य महिमाता को॥
इस प्रकार गुण गाते गाते अपने अपने घर आये।
चित्रकूट के भाव चित्र भी साथ साथ अपने लाये।

[८२]

वाचक ! बस विश्राम लीजिये पुन कभी हम आवेंगे।
नभचुम्बी अद्भुत हिमगिरि के चित्र मनोरम लावेंगे॥
चमत्कार जिनका लख प्रेमी चकित चित्त होजावेंगे।
प्रभु की महिमा का पृथ्वी पर पूरा परिचय पावेंगे॥

[८३]

विरम यहाँ पर वर्णतूलिके ! विभु की अकथ कहानी है।
उस अविगत की कथा अ तलों नहीं किसी ने जानी है॥
सिन्धु विन्दु को गिन कर क्या तू दिखलाती है नादानी।
नहीं नहीं का सिन्धु विचारा अनुपम कहते कवि ज्ञानी॥

पचम छवि

उपसंहार

[१]

क्या क्या देखें दो आँखों से, रोम रोम दृग हो जाते।
सन्तत विपिन विहारी होते, द्रुतगामी मनगति पाते॥
वाष्पयान से जल पर जाते, उड़ने को दो पर होते।
कुछ कुछ तब हम लख सकते थे, जो चिरजीवी नर होते॥

[२]

कानन अति कमनीय भव्य भू अचल अचल लख होजाते।
पच ज्ञान इन्द्रिय सुख साधन जहाँ प्रचुरता से पाते॥
पावन पवन स्पर्श देह से प्राणों को बल पहुँचाता।
सुरभित गंध घ्राण उपयोगी नित्य बढ़ा कर जो लाता॥

[३]

दर्शनीय हैं दृश्य दृगों को कानों को कलरव प्यारा।
रसना को षट्रस मंजुल हैं मन के हित नवरस धारा॥

कहाँ अत्रि से विज्ञानी हैं ? बस मुख्र मौन—निराशा है
ज्ञान ज्योति अब यहाँ न जगती अज्ञानावृत आशा है।

[४]

चित्रकूट यह वही वही है छवि विचित्र अनुपम सारी
मन्दाकिनी वही बहती है वही मधुर कलकल प्यारी।
देव सदन से कहाँ तपोवन कहाँ तपाधन नर नारी।
जो आदर्श अखिल भूतल के विभु—लीला की बलिहारी !!

[५]

'विभु' निराश क्यों इतना होते वही दिवस फिर आवेंगे।
यह परिवर्त्तनशील जगत है पुन कला शशि पावेंगे।
पुन पुरातन निराकार व्रत पुन वही श्रुतिरव होगा।
फिर वसुन्धरा पर हे भारत ! तेरा अति गौरव होगा॥

शब्दार्थ कोष

वक—आँख
स्यन्दन—टपकना
ज—झोपड़ा
कटित—चकित
कालोऽज्झस्वदीर्घप्लुत ।१।२। २७॥
पिवल्ली—केवाँच
वीर } कनेर
णिकार }
लाप—मोरपंख, समूह
लापी—मोर
कली—सुन्दर बोली
मदगिरि—चित्रकूट पर्वत
ल्क—केशर
—हाथी की पीठ का रंग विरंगा कम्बल
रपर्णी—खरैटी
दिर—कत्थे का वृक्ष
रुरु—मृग विशेष
णि—मनुष्य
णायुध—मुर्गा
माचल—अस्ताचल

चाष—नीलकंठ
चिञ्चा—इमली
चित्रकंठ—कबूतर
चित्रपद—तीतर
चित्रपुच्छ—मोर
चित्रवाज—मुर्गा
चित्रा—माया
चित्राग—चीता
चिरतन—पुरातन
चैत्ररथ—कुबेर का बाग
छदन—पत्ता
जन्तुराज—यमराज
जीमूत—बादल
तन्तुनाभ—मकड़ी
निकुरम्ब—समूह
निचुल—नरकुल
निर्जर—देवता
निषंग—तरकस
नीप—कदम्ब
पनस—कटहल
पवनाशन—साँप

पाटच्चर—चोर
पाटल—पाढल वृक्ष, गुलाब
पुरध्री—कुलीना
पुश्चली—निर्लज्ज स्त्री
पेशी—अभी खिलने वाली कली
प्रकर—समूह
प्रतीची—पश्चिम
प्लवग—बन्दर
फेनिल—फेन से युक्त
बदरी—बेर
बालधि—पूँछ
भद्रक—नीम
मधूक—महुआ
मनुजाद—राक्षस
मयूरसारिणी—निर्लज्ज स्त्री
मुकुल—कली
मीलित—बंद
मेचक—चँदोवा
मेरुज्योति—ध्रुवों के समीपस्थ प्रकाश विशेष (Aurora Borealis)
लम्बुषा—सतलरी हार

लोकलोचन—सूर्य्य
बकुल—मौलसिरी
वातायन—खिड़का
वानीर—नरकुल
विरुञ्ओली—पंक्ति
विभावरी—रात
विपञ्ची—वीणा
वकिल—काँटा
वञ्जुल—अशोक
शिखंडी मोर
शिरीष—सिरस का वृक्ष
शिंशिपा—सीसम
श्येन—बाज़
सहकार—आम
सागराम्बरा—पृथ्वी
सानु—पहाड़ के ऊपर चौरस मैदान
सुनासीर—इन्द्र
सुम—फूल
सौदामिनी—बिजली
स्वर्णफूल—धतूरा

पद्यपयोनिधि पर कतिपय सम्मतियाँ

वेदाचार्य्य श्री प० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर सम्पादक वैदिक धर्म —

'काव्य महोदधि का एक जाज्वल्यमान रत्न है।'

कविवर प० लोचनप्रसाद जी पाण्डेय —

"पद्य पयोनिधि के अनेक पद्य रत्नों में भाषा और भावका विशेषत्व पूर्ण चमत्कार है जो सहृदय काव्य प्रेमियों को आल्हाद प्रदान करने में अवश्य समर्थ होगा। आपकी चतुर्दशपदी कविता मुझे खूब रुची 'राष्ट्रीय,' और ऐतिहासिक' कवितायें भी सुन्दर हुई हैं। संग्रह सबके पढ़ने योग्य है। आशा है हिन्दी प्रेमी इसका आदर करेंगे।

श्री प० कामताप्रसाद जी गुरु —

पद्य पयोनिधि के अधिकांश पद्य सरस और भावपूर्ण हैं। भाषा सरल है। इस पुस्तिका के कवि होनहार प्रतीत होते हैं। कई स्थलों में में यथार्थ कविता पाई जाती है।"

श्री प० राधाचरण जी गोस्वामी —

खड़ी बोली की कविता में आपकी कविता भी कम वजन की नहीं है'

श्री प० रामनारायण मिश्र, काशी —

'पद्य पयोनिधि अपने ढङ्ग की निराली पुस्तक है प्रत्येक हिन्दी भाषा भाषी बच्चे के हाथ में यह पुस्तक होनी चाहिये। इसकी कविता दिल को लुभाने वाली और चरित्र को सुधारने वाली है।'

श्री प० जगन्नाथप्रसाद जी चतुर्वेदी, भूत पूर्व सभापति, हिन्दी साहित्य सम्मेलन —

'पद्य पयोनिधि पार करने पर प्रसन्नता हुई।'

कविरत्न श्री विद्याभूषण 'विभु' विरचित

प्रकाशित पुस्तकें

१ पद्यपयोनिधि (विविध सरस रचनाओं का विद्वानों द्वारा प्रशंसित संग्रह) मूल्य ३)

मुहावरा और कहावत (कहावत—पद्यकाव्य) मूल्य ।)

३ स्यारशाह तथा अन्य कहानियां (सचित्र) मूल्य ।)

४ चित्रकूट चित्रण मूल्य ।=)

५ विरजानन्द विजय—सचित्र (दयानन्द जन्म शताब्दि सभा मथुरा द्वारा प्रकाशित) मूल्य ।)

यन्त्रस्थ

गोबरगनेश तथा अन्य कहानियां।

७ लाल खिलौना।

८ भल्लो भैया।

९ शेखचिल्ली तथा अन्य कहानियां।

अप्रकाशित

१० देवर्षि दयानन्द (महाकाव्य)

लगभग १५०० छन्दों से सुशोभित तथा एक रङ्गीन चित्रों से सुसज्जित अति मनोरम अपूर्व ग्रन्थ।

११ पुरन्दर पुरी (दिल्ली के खण्डहरों का हृदय ग्राही चित्र)

१ जीवनाञ्जलि (वीर बलिदान)

?—ब्रह्मविज्ञान—(ईश तथा श्वेताश्वतर उपनिषद् का पद्यानुवाद) सत्य प्रकाश विशारद रचित मूल्य –)

—कलाकार्यालय, प्रयाग।